बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा, दिल्ली ११००३४

कक्षा -नवीं

अभ्यास -पत्रिका

तिथि -21 -12 -2020 से 24 -12- 2020

1. अपने छोटे भाई को दसवीं की बोर्ड परीक्षा की तैयारी अच्छे से करने की सीख देते हुए पत्र लिखिए।
2. क्रिसमस की छुट्टियाँ अपने साथ बिताने के लिए विदेश में रहने वाले अपने मित्र विपुल को आमंत्रित कीजिए।
3. उपहार भेजने के लिए अपनी बुआ को धन्यवाद पत्र लिखिए।
4. अनुच्छेद लिखिए -

- सब दिन होत न एक समान
- प्रकृति की रक्षा ,मानव की सुरक्षा

अपठित गद्यांश

अपठित गद्यांश प्रश्नपत्र का वह अंश होता है, जो पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तकों से नहीं पूछा जाता। यह अंश साहित्यिक पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं या समाचार-पत्रों से लिया जाता है। ऐसा गदयांश भले ही निर्धारित पुस्तकों से हटकर लिया जाता है परंतु उसका स्तर, विषय वस्तु और भाषा-शैली पाठ्यपुस्तकों जैसी ही होती है।

अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों को हल करते समय निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए –

- गद्यांश को एक बार सरसरी दृष्टि से पढ़ लेना चाहिए।
- पहली बार में समझ में न आए अंशों, शब्दों, वाक्यों को गहनतापूर्वक पढ़ना चाहिए।
- गद्यांश का मूलभाव अवश्य समझना चाहिए।
- यदि कुछ शब्दों के अर्थ अब भी समझ में नहीं आते हों, तो उनका अर्थ गद्यांश के प्रसंग में जानने का प्रयास करना चाहिए।
- अनुमानित अर्थ को गद्यांश के अर्थ से मिलाने का प्रयास करना चाहिए।
- गद्यांश में आए व्याकरण की दृष्टि से कुछ महत्त्वपूर्ण शब्दों को रेखांकित कर लेना चाहिए।

- अब प्रश्नों को पढ़कर संभावित उत्तर गद्यांश में खोजने का प्रयास करना चाहिए।
- शीर्षक समूचे गद्यांश का प्रतिनिधित्व करता हुआ कम से कम एवं सटीक शब्दों में होना चाहिए।
- प्रतीकात्मक शब्दों एवं रेखांकित अंशों की व्याख्या करते समय विशेष ध्यान देना चाहिए।
- मूल भाव या संदेश संबंधी प्रश्नों का जवाब पूरे गद्यांश पर आधारित होना चाहिए।
- प्रश्नों का उत्तर देते समय यथासंभव अपनी भाषा का ध्यान रखना चाहिए।
- उत्तर की भाषा सरल, सुबोध और प्रवाहमयी होनी चाहिए।
- प्रश्नों का जवाब गद्यांश पर ही आधारित होना चाहिए, आपके अपने विचार या राय से नहीं।
- अति लघूत्तरात्मक तथा लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तरों की शब्द सीमा अलग-अलग होती है, इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- प्रश्नों का जवाब सटीक शब्दों में देना चाहिए, घुमा-फिराकर जवाब देने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

1. विद्यार्थी जीवन को मानव जीवन की रीढ़ की हड्डी कहें, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। विद्यार्थी काल में बालक में जो संस्कार पड़ जाते हैं, जीवन भर वही संस्कार अमिट रहते हैं। इसीलिए यही काल आधारशिला कहा गया है। यदि यह नींव दृढ़ बन जाती है तो जीवन सुदृढ़ और सुखी बन जाता है। यदि इस काल में बालक कष्ट सहन कर लेता है तो उसका स्वास्थ्य सुंदर बनता है। यदि मन लगाकर अध्ययन कर लेता है तो उसे ज्ञान मिलता है, उसका मानसिक विकास होता है। जिस वृक्ष को प्रारंभ से सुंदर सिंचन और खाद मिल जाती है, वह पुष्पित एवं पल्लवित होकर संसार को सौरभ देने लगता है। इसी प्रकार विद्यार्थी काल में जो बालक श्रम, अनुशासन, समय एवं नियमन के साँचे में ढल जाता है, वह आदर्श विद्यार्थी बनकर सभ्य नागरिक बन जाता है। सभ्य नागरिक के लिए जिन-जिन गुणों की आवश्यकता है, उन गुणों के लिए विद्यार्थी काल ही तो सुंदर पाठशाला है। यहाँ पर अपने साथियों के बीच रहकर वे सभी गुण आ जाने आवश्यक हैं, जिनकी कि विद्यार्थी को अपने जीवन में आवश्यकता होती है।

प्रश्नः 1. जीवन की आधारशिला किस काल को कहा जाता है?

प्रश्नः 2. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

प्रश्नः 3. मानव जीवन के लिए विद्यार्थी जीवन की महत्ता स्पष्ट कीजिए।

प्रश्नः 4. छोटे वृक्ष के पोषण का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है और क्यों?

प्रश्नः 5. विद्यार्थी जीवन की तुलना पाठशाला से क्यों की गई है?

2.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

समस्याएँ वस्तुत: जीवन का पर्याय हैं। यदि समस्याएँ न हों, तो आदमी प्राय: अपने को निष्क्रिय समझने लगेगा। ये समस्याएँ वस्तुत: जीवन की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती हैं। समस्या को सुलझाते समय, उसका समाधान करते समय व्यक्ति का तत्व उभरकर आता है। धर्म, दर्शन, ज्ञान मनोविज्ञान इन्हीं प्रयत्नों की देन हैं। पुराणों में अनेक कथाएँ यह शिक्षा देती हैं कि मनुष्य जीवन की हर स्थिति में जीना सीखे व समस्या उत्पन्न होने पर उसके समाधान के उपाय सोचे। जो व्यक्ति जितना उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करेगा, उतना ही उसके समक्ष समस्याएँ आएँगी और उनके परिपेक्ष्य में ही उसकी महानता का निर्धारण किया जाएगा। दो महत्वपूर्ण तथ्य स्मरणीय हैं - प्रत्येक समस्या अपने साथ संघर्ष लेकर आती है। प्रत्येक संघर्ष के गर्भ में विजय निहित रहती है। समस्त ग्रंथों और महापुरुषों के अनुभवों का निष्कर्ष यह है कि संघर्ष से डरना अथवा उससे विमुख होना लौकिक व पारलौकिक सभी दृष्टियों से अहितकर है, मानव-धर्म के प्रतिकूल है और अपने विकास को अनावश्यक रूप से बाधित करना है।

(क) 'समस्याएँ वस्तुत: जीवन का पर्याय हैं' का तात्पर्य है :

(i) जीवन में समस्याएँ होती हैं,उन्हें स्वीकार करना चाहिए।

(ii) जीवन एक समस्या है तो शिकायत नहीं करनी चाहिए।

(iii) जीवन और समस्या का परित्याग होना चाहिए।

(iv) जीवन को समस्याओं से दूर रखना चाहिए।

(ख) धर्म, दर्शन, ज्ञान आदि किस प्रेरणा की देन है?

(i) अध्यात्म की चाह की

(ii) 'शांति की चाह की

(iii) समस्या समाधान की प्रेरणा की

(iv) जीने की चाह की

(ग) मानव के किस आचरण को मानव धर्म के प्रतिकूल माना है?

(i) संसार से विमुख होना

(ii) उत्साह से कार्य होना

(iii) संघर्ष से विमुख होना

(iv) कर्त्तव्य पालन न करना

(श) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा?

(i) संघर्ष सफलता का मूल मंत्र

(ii) जीवन और संघर्ष

(iii) जीवन एक समस्या

(iv) . जीवन की समस्याएँ

(ङ) पुराण की कथाएँ क्या शिक्षा देती है?

(i) जीवन आनंदपूर्वक जिएँ

(ii). समस्याओं से बचो

(iii) हर स्थिति में जीना सीखें

(iv) समस्याओं से पलायन करें

BBPS, RAMPURA